सर्वशिक्षा अभियान के आयाम

डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय

© लेखक/संपादक
प्रथम संस्करण : 2016
ISBN : 978-81-7487-987-5

ISBN 81-7487-987-0

9 788174 879875

राधा पब्लिकेशन्स
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन: 23247003, 23254306
Email : radhapublications@rediffmail.com
Website : www.radhapublications.com

श्री नितिन गर्ग द्वारा राधा पब्लिकेशन्स के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

अनुक्रम

1	उत्तर प्रदेश में प्राथमिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान की समीक्षा *प्रो.आर.पी.पाठक/डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज*	1
2	**Use of Training Experiences In Parishadiya Schools Under SSA- An Analytic Study** *Dr. Sushma Pandey/ Surabhi Mishra*	8
3	सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का दृष्टिकोण *डॉ. सुंजीत कुमार/अखिलेश यादव*	16
4	गोरखपुर जनपद में सर्व शिक्षा अभियान की प्रगति *डॉ. रमेशधर द्विवेदी*	20
5	**Addressing Gender Issues In Sarva Shiksha Abhiyan (SSA)** *Dr. Deepti Johri*	33
6	सर्व शिक्षा अभियान के दस वर्ष *डॉ. आदित्य कुमार चौबे*	41
7	सर्वशिक्षा अभियान की संरचना एक अवलोकन *डॉ. अमित कुमार राय*	48
8	सर्वशिक्षा अभियान : समन्वय की आवश्यकता *अंजू पाण्डेय*	56
9	सर्व शिक्षा अभियान और शिक्षा का अधिकार कानून *डॉ. राम पाण्डेय*	61
10	**Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya :** An Effective Mode of SSA For Girl Education *Dr. Rashmi Singh*	65

3

सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का दृष्टिकोण

*डॉ. सुंजीत कु
**अखिलेश या

शिक्षा अंधकार में उस प्रकाश की तरह है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शित करती है। मनुष्य में अन्तर्निहित शक्तियों के सम्यक्, प्राकृतिक, सुसम्ब तथा उत्तरोत्तर विकास का नाम ही शिक्षा है। शिक्षा का सम्बन्ध भले ही व्यक्ति हो, पर समाज और संस्कृति ही उसका आधार व साध्य होते हैं।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य और स्वाभाविक विकास में योग देती है। उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विक करती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तै करती है और उसके आचार-विचार व दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है समाज, देश और विश्व के लिये हितकर होती है।

शिक्षा व्यक्ति के विचार, व्यवहार और स्वभाव में स्थायी परिवर्तन लाता यह एक गतिशील प्रक्रिया है। इसकी गतिशीलता निरन्तर बनाये रखने को शि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विद्यार्थी राष्ट्र व देश की सम्पत्ति और भावी कर्णधार होते हैं, उन शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि गुणों का निर्माण विकास का उत्तरदायित्व शिक्षकों पर होता है। शिक्षाशास्त्रियों ने अब एक स्व में यह बात स्वीकार की है कि नवयुग में शिक्षा से साक्षरता तो बढ़ती ही रहे कुछ ही दिनों में हम निरक्षरता की कालिख से अपना मुंह धोकर साफ कर लें किन्तु चरित्र-निष्ठा और भाव संवेदना युक्त व्यक्तित्व का निर्माण करना वि का काम है।